शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध - पद्य भाग

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

दुख दुःशलादिक को अभी कहना यदपि अवशिष्ट है,
पर पाठकों का जी दुखाना अब न हमको इष्ट है।
कर बार-बार क्षमार्थना होते विदा अब हम यहीं,
सुख के समय, दुख की कथा अच्छी नहीं लगती कहीं।

भावार्थ

युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण की वन्दना करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। यह प्रसंग खण्ड काव्य के सप्तम सर्ग से उद्धृत है। प्रस्तुत पद्यांश इस सर्ग का अंतिम पद है। कवि कहना चाहता है कि आपने बहुत कष्ट झेला है परन्तु अब उन सब बातों का वर्णन करना उचित नहीं है। अब हम पुनः उन घटनाओं को स्मरण कर पाठकों का दिल दुखाना नहीं चाहता हूँ। अब मुझे इन सब बातों से कोई लेना-देना नहीं है। कवि मैथिलीशरण गुप्त बार-बार क्षमायचना करते हुए अब विदा लेना चाहते हैं।

कवि का कहना है कि बहुत दिनों के उपरांत सुख का समय आया है। ऐसी घड़ी में दुःख की कथा कहना अच्छी बात नहीं है। ऐसा कहकर अपने काव्य खण्ड को कवि यहीं पर विराम दे देते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
राष्ट्र० संस्कृत महाविद्यालय खुखलेना, ...

03/11/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

निबंधमाला - गद्य भाग

शीर्षक :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि'

लेखक :- किशोर जी

प्रश्न :- आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की जरुरत है, इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'सिद्धि और प्रसिद्धि' रचनाकार किशोरी (किशोर जी) का प्रसिद्ध निबंध है। लेखक ने इस निबंध में आधुनिक युग में देश अथवा विदेश को किस प्रकार की साहित्य की आवश्यकता है, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि सम्पूर्ण विश्व को ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो परंपरा पोषित होकर भी नवीन भावों और युगध्वनियों को मार्मिक बनाकर व्यक्त करने का सामर्थ्य रखता हो, जो कि साहित्यिक और शास्त्रीय दृष्टिकोणों के साथ-साथ जनवादी दृष्टि से भी सफल उतरता हो। लेखक का कहना है कि समय में परिवर्तन होना चाहिए। अब परियों, अन्नदाताओं और परवरदीगारों के हिन सामने फरमाइशी रेकार्ड बजाने के दिन लद गये। आज आदमी की आवाज पहचान कर आदमी के लिए उसी की आवाज में साहित्य लिखना होगा।

इस प्रकार निबंधकार किशोर जी भावी साहित्य का स्वरूप स्थिर करते हुए स्वयं लेखकों के साधारणीकृत होने का संदेश देकर घोषणा करते हैं कि पत्थर को देवता बनाकर बहुत दिनों तक पूजा गया, अब इन्सान को भगवान बनाकर उसकी वन्दना करनी होगी।

देव चरण प्रसाद
प्रशि० प्रा० हिन्दी
श०डॉ०सं०महावि० सुरकसेना, पूर्णियाँ
03/10/20

विकास की दौड़, भूमि के अपहरण तथा ट्रैक्टर द्वारा जुताई, सरस सलिला नदियों को श्रीहीन कर दिया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुलसेना, प्रौढ़ियाँ
७।१।२०

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, आ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग-2 गद्य भाग

शीर्षक :- ओ सदानीरा (यात्रा संस्मरण)

लेखक :- जगदीशचन्द्र माथुर

व्याख्या :-

" अब वे किलकती नहीं हैं। या तो लाज में गड़ी निस्पंद सरकती रहती हैं, या बरसात के दिनों उन्मत यौवना वीरांगनाओं की भाँति प्रचंड नर्तन करती हैं।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'ओ सदानीरा' पाठ से ली गई हैं। हिमालय से निकलकर चंपारण की भूमि को स्पर्श करती हुई बहने वाली नदियों के विषय में उनके बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लेखक जगदीशचन्द्र माथुर ने उक्त स्थान की स्थिति पर चिंतन किया है। यह प्रसंग उसी सन्दर्भ से जुड़ा हुआ है।

लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कहना चाहता है कि घने वनों के काटने एवं खेतों के निर्माण के कारण धरती नंगी हो गयी है। जिसके, कारण नदियों के स्वरूप में तेजी से बदलाव नहीं आता है। लेकिन भूमि एवं वनों के शोषण- दोहन से नदियों का स्वरूप बदल गया है। पूर्व की भाँति ये नदियाँ अब किलकती नहीं। उनकी धाराएँ संकीर्ण एवं कई धाराओं में विभक्त हो गयी हैं। वे अब कभी-कभी प्रचंड वेग से धन-जन का अपार क्षति पहुँचाती हैं। नदियाँ अब स्थिर होकर मन्द गति से बह रही हैं। बरसात के दिनों में अल्हड़ नवयुवती की तरह ये नदियाँ भी प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं और नर्तन करते हुए जन-जन को काफी क्षति पहुँचाती हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक का मन्तव्य है कि मानव ने अपने निजी स्वार्थ के लिए प्राकृतिक सुषमा का भरपूर शोषण किया है। इस क्षेत्र के वनों की अंधाधुंध कटाई,

शेष आगे